षट्खंडागम पुस्तक-१ (फोल्डर नं. ००१३९५)

मुख्य टाइटल

प्राक्कथन ---------- १

विषय सूची ---------- ८

षट्खंडागम परिचय (अंग्रेजी में) ---------- i-iv

श्री धलादि सिद्धान्तोंके प्रकाशमें आनेका इतिहास ---------- १

हमारी आदर्श प्रतियाँ ---------- ६

पाठ संशोधनके नियम ---------- १०

षट्खंडागमके रचयिता ---------- १३

आचार्य परम्परा ---------- २१

वीर-निर्वाण काल ---------- ३२

षट्खंडागमकी टीका धवलाके रचयिता ---------- ३५

धवलासे पूर्वके टीकाकार ---------- ४६

धवलाकारके सन्मुख उपस्थित साहित्य ---------- ५३

षट्खंडागमका परिचय ---------- ६३

सत्प्ररूपणाका विषय ---------- ७५

ग्रंथकी भाषा ---------- ७८

उपसंहार ---------- ८८

टिप्पणियोंमें उल्लिखित ग्रंथोकी संकेत-सूची ---------- ८९

सत्प्ररूपणाकी विषय-सूची ---------- ९१

शुद्धिपत्र ---------- ९४

मंगलाचरण ---------- ९६

सत्प्ररूपणा (मूल, अनुवाद और टिप्पण) ---------- १-२४०

मंगलाचरण ---------- १-७२

१. मंगलाचरण टीकाकारकृत ---------- १

२. सूत्रकारकृत पंचपरमेष्ठी नमस्काररूप मंगलाचरण ---------- ८

३. मंगल, निमित्त आदि छह अधिकारोंकी प्रतिज्ञा ---------- ८

४. मंगलका स्वरूप और विवेचन ---------- ९

१. नय-निरूपण ---------- १०

२. नयोंमें निक्षेपोंका अन्तर्भाव ---------- १४

३. निक्षेप-निरूपण ---------- १७

४. मंगलके पर्यायवाची नाम, निरुक्ति व अनुयोगद्वारोंसे कथन ---------- ३१

५. छह दंकडोंद्वारा मंगल-निरूपण ---------- ३९

६. सूत्रके मंगलत्व-अमंगलत्वका विवेचन ---------- ४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अरिहंतका शब्दार्थ और स्वरूप---------- ४२
८. सिद्धका शब्दार्थ और स्वरूप---------- ४६
९. अर्हत् और सिद्धमें भेदाभेद विवेचन---------- ४६
१०. आचार्यका शब्दार्थ औऱ स्वरूप ---------- ४८
११. उपाध्याय शब्दार्थ और स्वरूप---------- ५०
१२. साधु शब्दार्थ और स्वरूप ---------- ५१
१३. आचार्यादि परमेष्ठियोंमें भी देवत्वकी सिद्धि ---------- ५२
१४. अरिहंतोंको प्रथम नमस्कार करनेका प्रयोजन---------- ५३
५. निमित्त-कथन ---------- ५४
६. हेतु-कथन---------- ५५
१. अभ्युदय सुखमें राजा, महाराज, मंडलीक.... ---------- ५७
२. नैःश्रेयस-सुख-कथन---------- ५८
३. प्रकारान्तरसे निमित्त औऱ हेतुका कथन---------- ६०
७. ग्रंथ-परिमाण---------- ६०
८. ग्रंथ-नाम ---------- ६०
९. कर्ता के भेदोंका निरूपण ---------- ६०
१. क्षेत्र-विशिष्ट अर्थकर्ता ---------- ६१
२. कालकी अपेक्षा अर्थकर्ता---------- ६२
३. भावकी अपेक्षा अर्थकर्ता---------- ६३
४. ग्रंथ-कर्ता---------- ६४
५. अंगधारियोंकी परम्परा ---------- ६५
६. श्रुतावतार-वर्णन---------- ६७
जीवस्थानका अवतार----------७२-१३२
१०. उपक्रम---------- ७२-८३
१. आनुपूर्वीके तीन भेद ---------- ७२
२. नामके दश भेद---------- ७३
३. प्रमाणके पांच भेद---------- ८०
४. वक्तव्यताके तीन भेद---------- ८२
५. अर्थाधिकारके तीन भेद ---------- ८२
११. निक्षेप-कथन ---------- ८३
१२. नयनिरूपण---------- ८३-९१
१. नयके दो भेद---------- ८३
२. द्रव्यार्थिक नयका निरूपण---------- ८३
३. पर्यायार्थिक नयका निरूपण ---------- ८५
१३. अनुगम-निरूपण ----------९१-१३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. प्रमाणानुगमके भेदोंका निरूपण ---------- ९३
२. श्रुतज्ञानके भेद-प्रभेदोंका स्वरूप ---------- ९६
३. आग्रायणीय पूर्वके १४ अर्थाधिकार और जीवद्वाम... ---------- १२३
विषयकी उत्थानिका ---------- १३२-१५९
१४. चौदह मार्गणाओंका सामान्य स्वरूप निरूपण ---------- १३२-१५३
१. गतिमार्गणा ---------- १३४
२. इन्द्रियमार्गणा ---------- १३५
३. कायमार्गणा ---------- १३८
४. योगमार्गणा ---------- १३९
५. वेदमार्गणा ---------- १४०
६. कषायमार्गणा ---------- १४१
७. ज्ञानमार्गणा ---------- १४२
८. संयममार्गणा ---------- १४४
९. दर्शनमार्गणा ---------- १४५
१०. लेश्यामार्गणा ---------- १४९
११. भव्यमार्गणा ---------- १५०
१२. सम्यक्त्वमार्गणा ---------- १५१
१३. संज्ञिमार्गणा ---------- १५१
१४. आहारमार्गणा ---------- १५२
१५. अनुयोगद्वारके आठों भेदोंका सोपपत्तिक निरूपण ---------- १५३
सत्प्ररूपणा ---------- १५९-४१०
१६. ओघ और आदेशकी प्रतिज्ञा तथा गुणस्थान-निरूपण ---------- १५९-२००
१. मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ---------- १६१
२. सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान ---------- १६३
३. सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ---------- १६६
४. असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान ---------- १७०
५. संयतासंयत गुणस्थान ---------- १७३
६. प्रमत्तसंयत गुणस्थान ---------- १७५
७. अप्रमत्तसंयत गुणस्थान ---------- १७८
८. अपूर्वकरण गुणस्थान ---------- १७९
९. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान ---------- १८३
१०. सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान ---------- १८७
११. उपशान्तकषाय गुणस्थान ---------- १८८
१२. क्षीणकषाय गुणस्थान ---------- १८९
१३. सयोगकेवली गुणस्थान ---------- १९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. अयोगेवली गुणस्थान ---------- १९२
१५. सयोगी और अयोगीके मनका अभाव होनेपर... ---------- १९२
१६. सिद्धस्वरूप निरूपण ---------- २००
१७. मार्गणाओंमें गुमस्थान-निरूपण ---------- २०१-४१०
१. गतिभेद-निरूपण ---------- २०१
२. नरकगतिमें गुणस्थान-प्रतिपादन ---------- २०४
३. तिर्यंचगतिमें गुणस्थान-प्रतिपादन ---------- २०७
४. मनुष्यगतिमें गुणस्थान-प्रतिपादन ---------- २१०
५. उपशमविधि-निरूपण ---------- २१०
६. क्षपणविधि निरूपण ---------- २१५
७. देवगतिमें गुणस्थान-निरूपण ---------- २२५
८. शुद्ध-तिर्यचोंका निरूपण ---------- २२७
९. मिश्र-तिर्यचोका निरूपण ---------- २२८
१०. मिश्र और शुद्ध मनुष्योंका निरूपण ---------- २३१
११. इन्द्रियमार्गणाके भेद ---------- २३१
१२. इन्द्रियोंके भेद-प्रभेदोंका स्वरूप ---------- २३२
१३. एकेन्द्रिय जीवोंके भेद ---------- २४९
१४. पर्याप्ति-निरूपण ---------- २५४
१५. पर्याप्ति और प्राणमें भेद ---------- २५६
१६. द्वीन्द्रियादि जीवोंके भेद ---------- २५८
१७. अपर्याप्त अवस्थामें मनका निराकरण ---------- २५९
१८. इन्द्रियमार्गणामें गुमस्थान-सत्त्वप्रतिपादन ---------- २६१
१९. कार्यमार्गणाके भेद ---------- २६४
२०. स्थावरकायिक जीवोंके भेद ---------- २६७
२१. त्रसकायिका जीवोंके भेद ---------- २७२
२२. कायमार्गणामें गुणस्थान-निरूपण ---------- २७४
२३. योग मार्गणाके भेद व स्वरूप ---------- २७८
२४. मनोयोगके भेद और उनमें गुणस्थान-निरूपण ---------- २८०
२५. वचनयोगके भेद निरूपण और उनमें गुणस्थान-निरूपण ---------- २८६
२६. काययोगके भेद और उनमें गुणस्थान-निरूपण ---------- २८९
२७. केवलि-समुद्घात-विचार ---------- ३००
२८. त्रिसंयोगी योगोंके स्वामी ---------- ३०८
२९. द्विसंयोगी और एकसंयोगी योगोंके स्वामी ---------- ३०९
३०. योगोमें पर्याप्त व अपर्याप्त-विचार ---------- ३१०
३१. आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणामें पर्याप्त व अपर्याप्त-विचार ---------- ३२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. वेद मार्गणाके भेद व स्वरूप---३४०
३३. वपेदमार्गणामें गुणस्थान-विचार ---३४२
३४. आदेशकी अपेक्षा वेद-सत्त्व-प्रतिपादन---३४५
३५. कषायमार्गणाके भेद व स्वरूप---३४८
३६. कषायमार्गणामें गुणस्थान-विचार---३५१
३७. ज्ञानमार्गणाके भेद व स्वरूप---३५३
३८. ज्ञानमार्गणामें गुमस्थान-विचार---३६०
३९. संयममार्गणाके भेद व स्वरूप ---३६८
४०. संयममार्गणामें गुणस्थान-विचार ---३७४
४१. दर्शनमार्गणाके भेद व स्वरूप---३७८
४२. दर्शनमार्गणामें गुमस्थान-विचार---३८३
४३. लेश्यामार्गणाके भेद व स्वरूप ---३८६
४४. लेश्यामार्गणामें गुणस्थान-विचार ---३९०
४५. भव्यमार्गणाके भेद व स्वरूप ---३९२
४६. भव्यमार्गणामें गुणस्थान-विचार ---३९४
४७. सम्यक्त्वमार्गणाके भेद व स्वरूप---३९५
४८. सम्यक्त्वमार्गणामें गुणस्थान विचार---३९६
४९. आदेशकी अपेक्षा सम्यक्त्वसत्त्व प्रतिपादन---३९९
५०. संज्ञिमार्गणाके भेद व स्वरूप ---४०८
५१. संज्ञिमार्गणामें गुणस्थान-विचार ---४०८
५२. आहारमार्गणाके भेद और उसमें गुणस्थान-विचार ---४०९

परिशिष्ट

संत-परूवणा-सुत्ताणि ---१
अवतरण-गाथा-सूची---११
ऐतिहासिक नाम सूची---१६
भौगोलिक नाम सूची ---१७
ग्रंथ नामोल्लेख---१८
वंश नामोल्लेख---१८
प्रतियोंके पाठ-भेद---१९
प्रतियोंमें छूटे हुए पाठ---२६
विशेष टिप्पण---२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org